उपसंहार

SHIVAJI UNIVERSITY
KOLHAPUR

५ उपसंहार

मध्ययुग में इस महादेश में भक्ति का व्यापक आंदोलन उठ खडा हुआ था। सगुण-निर्गुण, राम-कृष्ण, शैवय-शाक्त आदि विविध तरह की भक्ति धाराओं ने इस देश के जनमानस को रस मग्न कर दिया था। भक्ति का यह आंदोलन आकस्मिक नहीं था। कुछ विद्वानों ने इस विदेशी प्रभाव माना है। किंतु यह विचार निराधार है। वेद काल से लेकर जो भक्ति-भावना प्रकट हो रही थी , उसकी अंतिम परिणति मध्ययुगीन भक्ति आंदोलन में हुई है। इस्लामी आक्रमण जैसी राजनीतिक,परिस्थियों के कारण उसे कुछ पोषक वातावरण प्राप्त हुआ होगा।

भक्ति अन्य मार्गों की अपेक्षा सर्वजन सुलभ होने के कारण लोकप्रिय रही। ज्ञानमार्ग या कर्ममार्ग सामान्यजनों के वश की बात नहीं है। किंतु भक्ति सब तरह के भेद भाव भुला कर मुक्ति के द्वारा सब के लिए खोल देती है। जैसे-

हरि को भजै सौं हरि को होय।

का नारा लगा कर भक्ति ने सब को परमात्मा की शरण में लाने का प्रयास किया।

श्रीमद्भागवत महापुराण इस भक्ति का प्रमुख आधार ग्रंथ है। इस महा-पुराण ने मध्ययुगीन भक्ति को बडी प्रेरणादी। वैष्णव भक्ति का यह श्रेष्ठ ग्रंथ है। भागवत ने विष्णु के सभी अवतार का गुणगान किया है किंतु दसवे स्कंध पुर्वार्ध और उत्तरार्ध में कृष्ण लीलाओं का सरस गान किया है। मध्ययुगीन कृष्णभक्त कवियों के लिए भागवत् का यह स्कंध प्रेरणापद बना है।

कृष्णभक्ति की परम्परा इसा पूर्व पाँचरात्रों से प्रारंभ होती है। जिस का निरतंर विकास होता गया और मध्ययुग में अनेक कृष्णभक्ति सम्प्रदाय स्थापित हुए। वैष्णव भक्ति सम्प्रदायों की परम्परा यदपि रामानुजाचार्य से प्रारंभ होती है, किंतु कृष्ण को ही परब्रह्म मान कर जो सम्प्रदाय मध्ययुग में उठ खडे हुये उनमें विष्णु-स्वामी का रुद्रसंप्रदाय, निम्बार्क संप्रदाय, महाप्रभु वल्लभाचार्य का पुष्टिमार्ग, राधावल्लभी संप्रदाय, चैतन्य गौडी संप्रदाय, हरिदासी संप्रदाय, सखी संप्रदाय आदि प्रमुख हैं। इन सम्प्रदायों में हिंदी क्षेत्र तथा साहित्य की दृष्टि से वल्लभाचार्य के पुष्टिमार्ग का अत्यंत महत्व है। इस सम्प्रदाय ने ब्रजभाषा तथा हिंदी साहित्य के विकास के लिए अपूर्व योगदान किया है। महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्यों में से चार शिष्य कवि और उनके बाद गोस्वामी विटठ्लनाथ के शिष्यों में से चार शिष्य कवियों को मिला कर गोस्वामी विटठ्लनाथ ने अष्टछाप की रचना की। गोकुल में श्रीनाथ के मन्दिर में कीर्तन सेवा का भार इन कवियों को सोंपा और इन कवियों ने कृष्ण

चरित के विविध प्रसंगों को लेकर भावभीनी काव्यरचना की, जो हिंदी साहित्य का सिंगार है।

महाप्रभु वल्लभाचार्य का भक्ति के क्षेत्र में केवल इस लिए योगदान नहीं है कि उन्होंने कृष्णभक्ति संप्रदाय की स्थापना करके हिंदी कवियों को प्रेरित किया और ब्रजभाषा को बढावा दिया। बल्कि दर्शन और साधना की दृष्टि से उनका महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने शंकराचार्य के मायावाद का खंडन करके शुध्दाद्वैतवाद की स्थापना की। और इस जगत् को सत्य बताया। इसी प्रकार साधन मार्ग में भी उन्होंने भगवान की कृपा [पुष्टि] पर बल दिया। भगवान की कृपा से जीव का उध्दार होता है। उसकी लीला नित्य चलती है। उस लीला में सहभागी हो कर आनंद-लाभ करना जीव का कर्तव्य है।

महाकवि सूरदास " अष्टछाप " के कवियों में ज्येष्ठ तथा श्रेष्ट कवि रहे। प्राप्त प्रमाणों से ज्ञात होता है कि सूरदास अन्धे थे। और विरक्त भाव से विनय के पद गा कर भक्ति करते थे। किंतु महाप्रभु वल्लभाचार्य से गौघाट पर जब उनकी भेंट हो गयी तब उनके जीवन में बडा परिवर्तन आया। महाप्रभु ने उन्हें पुष्टि मार्ग की दीक्षा दी और उन्हें श्रीमद्भागवत की अनुक्रमणिका सुना कर लीलागान करने का आदेश दिया। तब से लेकर श्रीनाथ के मन्दिर में रह कर सूरदासजी ने कृष्ण लीलाओं के असंख्य पदों की रचना की। "सूरसागर" में सूरदास ने उपलब्ध पद संगृहीत हैं। इन पदों में वैसे माधुर्य, सख्य, वात्सल्य, दास्य, और शांत भक्ति के पाँचों भावों का सुन्दर प्रकाशन हुआ हैं। किंतु इन में भी सूरदास की मनोवृत्ती वात्सल्य और शृंगार भाव में ही अधिक रमी हैं। और शृंगार में भी विप्रलभ शृंगार में। विप्रलभ शृंगार में सूरदास का भ्रमरगीत हिंदी साहित्य में भक्तिभाव और काव्य-सौंदर्य की दृष्टि से अद्वितीय हैं। किंतु उनके वात्सल्य भाव से ओत-प्रोत बालक्रीडा के पद भी भाव सौंदर्य तथा काव्य सौंदर्य की दृष्टि से अद्वितीय हैं। केवल हिंदी में ही नही ऐसा वात्सल्य भाव का चित्रण संसार की अन्य भाषावों में भी दुर्लभ है इसी लिए आचार्य रामचंद्र शुक्लजी जैसे समीक्षक ने कहा है कि, " सूरदास बाल जीवन का कोना कोना झाँक आये हैं।"

सूरदास ने वात्सल्य भाव का विस्मय विस्तार से किया है। उन्होंने वा वात्सल्य रस के सभी अगों का बडा मनोहारी चित्रण किया है। सूरदास के काव्य में वात्सल्य भाव के आश्रय के रूप में नंद, यशोदा, गोपीजन, बलराम तथा अन्य

ब्रजजन आते हैं। इन आश्रयों में सूरदास ने माता-पिता तथा सखा के मनोभावों का विविध प्रसगों में मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। सूरदास के वात्सल्य भाव के पदों का आलंम्बन बाल कृष्ण है। वह परब्रह्म हो कर भी एक मानवी बालक के रूप में अवतरित है यही उसकी विलक्षणता है। उसका रूप सौंदर्य, उसके हावभाव, उसकी सहज चेष्टायें, उसकी क्रीडाएँ, उसका भोलापन, उसकी आदतें, उसकी शरारतें आदि : उददीपन बन कर वात्सल्य भाव को उभारते हैं और उनके बीच प्रेम, क्रोध, गर्व, उत्साह आदि आदि संचारी भाव आ आकर वात्सल्य भाव को पुष्ट करते जाते हैं। सूरदास बाल कृष्ण के अलौकिक चमत्कारों का भी वर्णन करते हैं किंतु उससे काव्य रस में बाधा नहीं पडती।

सूरदास का काव्य वस्तुत: भक्ति काव्य है। इसलिए उसे भक्ति रस की दृष्टि से देखना चाहिए परंतु काव्यरस की दृष्टि से भी वह उत्कृष्ट है। सूरदास के वात्सल्य चित्रण का आलम्बन बालकृष्ण स्वंयम परब्रह्म है इसलिए उसकी बाललीलाओं का गान एक ओर भक्ति रस पूर्ण है। और सूरदास ने वह तन्मय हो कर किया है तो दूसरी ओर काव्य पूर्ण भी है इसलिए काव्य रस से ओत-प्रोत है। मध्ययुग में भक्ति का जब व्यापक प्रचार हुआ तब भक्ति रस का सिध्दांत रखा गया। और उसमें वात्सल्य भाव भक्ति भाव को स्विकार किया गया। काव्यशास्त्र में भी वात्सल्य रस को उसी समय मान्यता प्राप्त हुई है।

सूरदास के वात्सल्य भाव के पदों की रसात्मकता . देखने से स्पष्ट होता है कि वात्सल्य भाव एक सार्वजनीन और सर्वसुलभ भाव है। सूरदास का काव्य भक्ति तथा काव्य के रूप में वात्सल्य भाव की महत्ता सिध्द करता है।

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-